जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना, संरचना एवं उसके उद्देश्य एवं प्रमुख कार्य –

राष्ट्रीय शिक्षा नीति १९८६ के तहत सम्पूर्ण देश के समस्त जनपदो में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना की गयी। उत्तर प्रदेश में विभिन्न चरणों में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना हुई। इसी प्रक्रिया के तहत जनपद बदायूँ में वर्ष १९९६ में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की गयी।

उद्देश्य एवं प्रमुख कार्य –

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना का उद्देश्य निम्नवत् है –

१. प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों की शैक्षिक गुणवत्ता की वृद्धि हेतु विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों का संचालन।
२. प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में शिक्षण कौशल दक्षता विकास हेतु विभिन्न प्रशिक्षणों, कार्यशालाओं एवं श्रेणियों का आयोजन करना।
३. विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों के शैक्षिक स्तर आंकलन हेतु वेसलाइन सर्वे मिड टर्म एसेसमेन्ट, सत्र परीक्षाओं एवं वार्षिक परीक्षाओं का आयोजन कराना।
४. शैक्षिक आंकड़ों का संकलन, विश्लेषण कर आगामी योजना हेतु उनका उपयोग करना।
५. विद्यालय अनुश्रवणकर्ताओं का प्रशिक्षण, शैक्षिक समस्याओं के निराकरण हेतु उनकी बैठकों का आयोजन कराना।
६. बी०टी०सी० द्विवर्षीय प्रशिक्षण एवं विशिष्ट बी०टी०सी० एवं शिक्षामित्र, शिक्षा अनुदेशक, बी०आर०सी० समन्वयकों के प्रशिक्षणों का संचालन कराना।
७. शिक्षा के सार्वजनीकरण हेतु संस्थागत एवं वार्षिक नियोजन करना।
८. शैक्षिक समस्याओं के निराकरण हेतु क्रियात्मक शोध कार्यो का संचालन करना।
९. पाठ्यक्रम इकाइयों का निर्माण पाठ्यक्रम संशोधन एवं मूल्यांकन करना।
१०. श्रव्य दृश्य उपकरणो का विकास, संकलन एवं कक्षा शिक्षण में उसका उपयोग कराना।
११. अल्प व्ययी एवं निःशुल्क शिक्षण सामग्री का निर्माण एवं प्रशिक्षण तथा शिक्षण में उपयोग कराना।

संरचना –

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान को प्रमुखतः ०७ विभागो में विभाजित किया गया है यह ०७ विभाग निम्नवत् है –

क्र०सं०	विभाग का नाम	कार्यरत प्रभारी एवं सदस्य
१	सेवापूर्व विभाग	श्री राजेन्द्र पाल (प्रभारी) श्री मो० नवेद खां श्री रघुपाल सिंह
२	सेवारत विभाग	श्री संजीव कुमार सक्सेना (प्रभारी) श्री साहब सिंह, अरविन्द गुप्ता
३	नियोजन एवं प्रबंधन विभाग	श्रीमती वीरा रानी सिन्हा (प्रभारी) श्रीमती कुसुम कुमारी , श्री डा० राजीव शर्मा
४	पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग	श्री मो० नवेद खां (प्रभारी) श्री डा० रामपाल सिंह शास्त्री , कु० कंचन सक्सेना

NIC BUDAUN

५	शैक्षिक तकनीकि विभाग	श्री जी०पी० वर्मा (प्रभारी) श्री नरेश सिंह सोलंकी
६	जिला संसाधन इकाई विभाग	श्रीमती कुसुम सक्सेना (प्रभारी) श्री संजीव कुमारी जौहरी, श्री हरीश कुमार दिनकर
७	कार्यानुभव शिक्षा विभाग	श्रीमती आनन्द लता शर्मा (प्रभारी) श्री मुनेन्द्रपाल सिंह

प्रारम्भिक स्तरीय शैक्षिक गुणवत्ता विजन वर्ष २०१०-११

बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित विद्यालयों के शिक्षक/शिक्षिकाओं को नवीन शिक्षण विधियों/नवाचारों से परिचित कराने के उद्देश्य से जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बदायूँ द्वारा सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत शासन के निर्देशानुसार प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक सेवारत शिक्षकों के प्रशिक्षणों का निरन्तर आयोजन किया जा रहा है ताकि कक्षा १ से कक्षा ८ तक के अधिकांश बच्चों में शैक्षिक गुणवत्ता का अपेक्षित विकास हो सके यह प्रशिक्षण सर्व शिक्षा अभियान एवं निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उ०प्र०, लखनऊ के दिशा निर्देशन में संचालित किये जा रहे है।

जनपद में शैक्षिक गुणवत्ता विजन निम्नवत् है -

गुणवत्ता विजन शिक्षा के संदर्भ में बच्चों तथा शिक्षण के प्रति हमारे मौलिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है तथा इस प्रश्न पर विचार करता है कि गुणवत्तापरक शिक्षा के लिये क्या वांछनीय है। बच्चे के परिवेशीय वातावरण और सीखने की प्रकृति की विशिष्टता के आधार पर बच्चों के अर्थ सृजन में विद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका को भी रेखांकित करता है। इसके अन्तर्गत सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका, विविध विषयों के शिक्षण की विद्या, कक्षा में शिक्षण गतिविधियों का स्वरूप, विद्यालय के बाहर सीखने की गतिविधियॉ व अनुभव, विषयवस्तु के स्थान पर समझ के आकलन आदि मुद्दों पर दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है जो बच्चों की शैक्षिक गुणवत्ता को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

१. बच्चे के प्रति दृष्टिकोण

- सभी बच्चों में सीखने की स्वभाविक प्रवृत्ति एवं अन्तर्निहित क्षमता होती है।
- सीखने एवं अभिव्यक्ति के परिप्रेक्ष्य में सभी बच्चे विशिष्ट होते हैं। बच्चे अपने आप अनुभव द्वारा, स्वयं करके, स्वयं बनाकर, प्रयोग करके एवं पढ़कर सीखते हैं साथ ही साथ दूसरों से भी विमर्श करने, पूछकर, सुनकर उस पर चिंतन व मनन करके तथा गतिविधि या लेखन के जरिए अभिव्यक्त करके भी सीखते हैं।
- सीखने की प्रक्रिया केवल विद्यालय के अन्दर नहीं होती है वरन् यह प्रक्रिया विद्यालय के अन्दर व बाहर दोनो जगहों पर चलती है। अतः विद्यालय और बच्चे के परिवेशीय अनुभवों का सामंजस्य सीखने की प्रभावी प्रक्रिया हेतु आवश्यक है।
- प्रत्येक बच्चे की प्रकृति अलग होती है। अतः शिक्षण में बच्चों को रटाने के स्थान पर समझ विकसित करने के लिये आवश्यक है कि सीखने की गति उचित रखी जाये।
- सीखने की प्रक्रिया में विविधता व चुनौतियॉ होनी चाहिए ताकि वह बच्चों को रोचक लगे और उन्हें व्यस्त रख सकें।

NIC BUDAUN

- सभी बच्चे सक्रिय रूप से पूर्व ज्ञान एवं उपलब्ध सामग्री/गतिविधियों के आधार पर अपने लिये अर्थ निर्माण करते हैं।
- सभी बच्चे अपने ज्ञान/अर्थ का निर्माण करते हैं। और उनके द्वारा किया गया निर्माण ही सीखना है। सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से व्यस्त एक बालक या बालिका पूछताछ, अन्वेषण, प्रश्न पूछना, वाद-विवाद, व्यवहारिक प्रयोग व ऐसा चिंतन अपने ज्ञान का सृजन खुद करता/करती है। ये सभी बच्चों की सक्रिय व्यस्तता को सुनिश्चित करते हैं।
- आसपास के वातावरण, प्रकृति, चीजों व लोगों से कार्य व भाषा दोनो के माध्यम से अंतःक्रिया करना सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। इधर-उधर घूमना, खोजना, अकेले काम करना या अपने दोस्तों या वयस्कों के साथ काम करना, भाषा को पढ़ना, अभिव्यक्त करना, पूछने और सुनने के लिये प्रयोग करना, वे कुछ ऐसी महत्वपूर्ण क्रियायें है। जिनसे सीखना संभव होता है।

२. (१) **<u>शिक्षक की भूमिका एवं शिक्षक-प्रशिक्षण के प्रति दृष्टिकोण -</u>**

- शिक्षक ज्ञान का स्त्रोत नहीं वरन् एक ऐसा सहायक जो सूचना को अर्थ/बोध में बदलने की प्रक्रिया में विविध उपायों से बच्चों की सहायता करें।
- निर्देशों के स्थान पर अवलोकन, अनुभव, प्रयोग आदि विविध गतिविधियों के माध्यम से ज्ञान सृजन के अवसर उपलब्ध कराने की दक्षता।
- प्रत्येक बच्चे को उसकी सीखने की विशेषता के आधार पर पहचानने एवं स्वीकार करने की दक्षता।
- प्रत्येक बच्चे की परिवेशीय विशिष्टता एवं अनुभव को मान्यता।
- बच्चे के अनुसार शिक्षण गतिविधि आयोजन में दक्षता जिनसे सभी बच्चों को सीखने के अवसर उपलब्ध हों।
- बच्चों को सक्रिय सीखने वालों के रूप में पहचानना न कि निष्क्रिय ग्रहणकर्ता के रूप में।
- तथ्यों अथवा सूचना को ज्ञान समझने के स्थानपर अनुभवों के माध्यम से निर्मित मानने की दक्षता।
- कार्यानुभव की उपयोगिता को दृष्टिगत रखते हुये बच्चे के व्यवाहारिक अनुभव एवं अकादमिक ज्ञान का सामंजस्य करने में दक्षता।
- बच्चों को उसके क्रियाकलापों के आधार पर अवलोकन एवं मूल्यांकन की दक्षता।
- बच्चों में अभिव्यक्ति की क्षमता एवं अवलोकन, चिंतन, विश्लेषण एवं सृजित ज्ञान के अनुप्रयोग हेतु अवसर उपलब्ध कराने की दक्षता।
- शिक्षण विद्या के साथ-साथ सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी विद्याओं का प्रयोग करने में सक्षम।
- शैक्षिक नवाचार की अभिरूचि एवं क्षमता।

२. (२) **<u>शिक्षक-प्रशिक्षण के प्रति दृष्टिकोण</u>**

- शिक्षक-प्रशिक्षण शिक्षकों की दक्षता संवर्द्धन एवं विद्यालय वातावरण में परिवर्तन का संवाहक।
- शिक्षक-प्रशिक्षण शिक्षकों के आपसी कक्षा अनुभवों पर चर्चा एवं चिंतन के रूप में।
- अपेक्षित विद्या अथवा विषयवस्तु के संदर्भ में शिक्षक की दक्षता संवर्द्धन।

MGBUDAUN

- सैद्धन्तिक और व्यवहारिक ज्ञान का समेकन, जिससे शिक्षण में परिवेशीय ज्ञान का समावेश होता है।
- शिक्षक-प्रशिक्षण एक सतत प्रक्रियागत गतिविधि है, जिसके माध्यम से बच्चों के साथ काम करने एवं नियमित मूल्यांकन की दक्षता, बच्चे के प्रति दृष्टिकोण एवं विषयों के प्रस्तुतीकरण का मूल्यांकन होता है।
- शिक्षक प्रशिक्षण का बहुविधि मूल्यांकन-स्वमूल्यांकन, सहकर्मी मूल्यांकन, शिक्षकों द्वारा प्रतिपुष्टि और औपचारिक मूल्यांकन।

३. **सक्रिय कक्षा कक्ष प्रक्रिया के प्रति दृष्टिकोण**

- ज्ञान पूर्व निर्धारित सूचना अथवा प्रदत्त तथ्य नहीं वरन् बच्चे द्वारा अपने स्व-अनुभवों से निर्मित होता है तथा इन अनुभवों के माध्यम से अर्थ सृजन करने में प्रत्येक बच्चा सक्रिय भागीदार होता है न कि निष्क्रिय ग्रहणकर्ता।
- कक्षा-कक्ष में बच्चों को सूचना प्रदान करने अथवा तथ्यों को रटाने के स्थान पर ज्ञान सृजन के लिये बच्चों को विद्यालय में अथवा विद्यालय के बाहर विविध गतिविधियों के अवसर उपलब्ध होने आवश्यक हैं।
- कक्षा-कक्ष में भय रहित, रोचक एवं उत्साहपूर्ण वातावरण आवश्यक है जहॉ बच्चों को प्रश्न पूछने एवं अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहनयुक्त अवसर उपलब्ध हों। कक्षा-कक्ष में बच्चों को मौखिक एवं शारीरिक प्रताड़ना निषिद्ध हो।
- सीखने के लिये बच्चों को तरह-तरह की गतिविधियों को और क्रिया कलापों में व्यक्तिगत रूप से, जोड़ी में या छोटे समूहो में क्रियाशील होने के पर्याप्त अवसर हों।
- शिक्षक कक्षा में शिक्षण के स्थान पर बच्चों के लिए अर्थ पूर्ण गतिविधियों उपलब्ध कराने में निरन्तर सहायक हो तथा सतत् अवलोकन व परीक्षण की प्रक्रिया भी गतिमान रहे।
- कक्षा शिक्षण की प्रक्रिया में सक्रिय अभिभावकों को भी जोड़ा जाये ताकि उनके पारम्परिक परिवेशीय ज्ञान को विद्यालय के साथ जोड़कर बच्चों को अनुभव के रोचक अवसर उपलब्ध कराये जा सकें।

४- **शिक्षण विद्या के प्रति दृष्टिकोण**

विविध विषयों यथा-भाषा, गणित, विज्ञान और समाज विज्ञान आदि के बीच कठोर विभाजन की दीवारों को नीचा करने की आवश्यकता है ताकि सीखने के रोचक एवं वैविध्यपूर्ण तरीके प्रयोग किये जा सकें। इससे बच्चों को रूचि एवं आनन्द के साथ सक्रिय रखा जा सकता है। शिक्षण के दृष्टिकोण से विषयों में अन्तः सम्बन्ध के साथ-साथ विषयगत शिक्षण की विद्याओं में निम्न दृष्टिकोण अपनाया जायेगा :-

४. (१)- **भाषा शिक्षण**

- बच्चों में भाषा-पढ़ना, लिखना, बोलना और सुनना-की जन्मजात क्षमता होती है। अधिकांश बच्चों में भाषा की उक्त दक्षतायें विद्यालय में आने से पहले ही विद्यमान रहती हैं।
- भाषा का बच्चों के विचार और अभिव्यक्ति से गहरा संबंध होता है, क्योंकि भाषा की प्रभावी समझ और प्रयोग के माध्यम से बच्चे विचारों, व्यक्तियों और वस्तुओं तथा अपने आसपास के संसार से अपने आपको जोड़ते हैं।
- बच्चा अपनी घरेलू भाषा की कक्षा तक सीमित नहीं होता। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान या गणित की कक्षायें भी एक तरीके से भाषा की ही कक्षा होती हैं।

NIC BUDAUN

- भाषा शिक्षण का उद्देश्य पढ़ने की नियमित आदत विकसित करना तथा समझकर पढ़ना है ताकि बच्चों के ज्ञान निर्माण में भाषा उपयोगी हो सकें।
- विद्यालयों में भाषा शिक्षण हेतु पाठ्यपुस्तकें, कक्षा पुस्तकालय, क्रमिक साहित्य, एवं अन्य पठन सामग्री जो बच्चों के लिये समृद्ध वातावरण उपलब्ध कराये।

४.(२)- **गणित शिक्षण**

- बच्चे गणित से भयभीत होने की बजाये उसका आनन्द उठायें।
- गणित को ऐसा विषय मानें जिस पर वे बात कर सकते हैं और जिस पर साथ-साथ काम कर सकते हैं। बच्चे सार्थक समस्यायें उठाने में सक्षम हो सकें और उन्हें हल करें।
- बच्चे गणित की मूल संरचना को समझें : अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित त्रिकोणमिति के सभी मूल तत्व समस्या के समाधान की अनेक युक्तियों अर्थात् सामान्यीकरण, परिमापन, सादृश्यता, स्थिति विश्लेष्ण, समस्या को सरल रूप में बदलना, अनुमान लगाना व उसकी पुष्टि करना आदि के लिये पद्धति मुहैया कराते हैं।
- गणित की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे बच्चों के वे संसाधन समृद्ध हों जो चिंतन और तर्क में, अमूर्त की संकल्पना करने और उनका व्यवहारिक जीवन में प्रयोग करने में, समस्याओं को सूत्रबद्ध करने और सुलझाने में उनकी सहायता करें। उद्देश्यों का यह व्यापक फलक उस प्रासंगिक और अर्थपूर्ण गणित को पढ़ाकर तय किया जा सकता है जो बच्चों के अनुभवों में गुथी हुई हो।
- गणित के दायरे को और विस्तृत करने की जरूरत है और इसे दूसरे विषयों से जोड़ने की जरूरत है।
- बच्चों की आंकिकीय दक्षताओं का विकास अर्थात् उसमें तार्किक चिंतन करने, अमूर्त संरचनाओं को समझने तथा करके समस्याओं का समाधान करने की क्षमता का विकास हो।
- विद्यालयों में गणित शिक्षण हेतु गणित कॉर्नर एवं अन्य सामग्री जो बच्चों के लिये समृद्ध वातावरण उपलब्ध कराये।

४.(३)- **विज्ञान शिक्षण**

- विज्ञान शिक्षण प्रयोग एवं गतिविधि आधारित होगा ताकि बच्चे करके सीखें।
- प्राथमिक सतर पर बच्चों की सहज जिज्ञासु प्रवृत्ति के पोषण के लिये तथा विषयवस्तु को सरल बनाने के लिये आसपास के वातावरण की चीजों के सूक्ष्म अवलोकन, खोज, संकलन, वर्गीकरण आदि गतिविधियों के माध्यम से अर्थ सृजन के अवसर उपलब्ध कराये जायेंगे।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर बच्चों को विज्ञान की अवधारणाओं को गतिविधियों एवं प्रयोगों के द्वारा समझने पर ध्यान केन्द्रित किया जायेगा। इसमें अवलोकन, संकलन, वर्गीकरण के साथ-साथ विश्लेषण, संश्लेषण तथा अनुप्रयोग के माध्यम से सृजित ज्ञान की पुष्टि के अवसर उपलब्ध कराये जायेंगे। इसके लिये सुनियोजित गतिविधियाँ, प्रोजेक्ट व प्रयोग की व्यवस्थायें की जायेंगी।
- विज्ञान शिक्षण का केन्द्र बिन्दु बच्चों को स्वाभाविक जिज्ञासा एवं सृजनशीलता के लिये अवसर उत्पन्न कराना होगा।
- विद्यालयों में विज्ञान शिक्षण हेतु प्रयोगशाला, सुनियोजित गतिविधि/प्रोजेक्ट सामग्री जो बच्चों के लिये समृद्ध वातावरण उपलब्ध करायें।
-

NIC BUDAUN

४.(४)- सामाजिक विषय शिक्षण

- सामाजिक विज्ञान शिक्षण हेतु सहभागिता और विचार-विमर्श पर आधारित गतिविधिपरक विद्याा अपनायी जायेगी ताकि बच्चे भौतिक, जैविक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रोजेक्टों के माध्यम से अपने परिवेश को समझा सकें।
- सामाजिक विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य जेण्डर संवेदनशीलता, सामाजिक, सांस्कृतिक सरोकारों के प्रति जागरूकता विकसित करना होगा।
- सामाजिक विज्ञान में तथ्यों को रटने के स्थान पर समझ विकसित करने का प्रयास किया जायेगा तथा इसके लिये बच्चों में आलोचनात्मक एवं वस्तुपरक चिंतन की दक्षता विकास हेतु प्रयास किया जायेगा।
- सामाजिक विज्ञान शिक्षण स्वस्थ वैचारिक स्वतंत्रता, विश्वास, परस्पर सम्मान और विविधता के आदर जैसे मानवीय मूल्यों के लिये सुदृढ़ आधारतैयार करने में सहायक होगा।
- सामाजिक विज्ञान के विविध अंगों यथा-इतिहास शिक्षण में देश के विधि भागों में गतिमान विकास के साथ-साथ ही विश्व के अन्य भागों में हो रहे विकास से बच्चों को परिचित कराया जायेगा। भूगोल शिक्षण पर्यावरण, भौतिक संसाधन तथा स्थानीय-वैश्विक स्तरों के विकास के बीच सामंजस्य पर केन्द्रित होगा, राजनीति विज्ञान बच्चों में विविध स्तरों पर सरकार के गठन, कार्योऔर उसमें नागरिक सहभागिता की प्रक्रियाओं के प्रति समझ विकसित करेगा तथा अर्थशास्त्र बच्चों में परिवार, बाजार और राज्य की समझ देने पर केन्द्रित होगा।

४.(५)- कला और शारीरिक शिक्षा

- कला और शारीरिक शिक्षा में सभी बच्चों की सहभागिता सुनिश्चत करना।
- प्रत्येक विद्यालय में शारीरिक शिक्षा एवं कला हेतु सामग्री तथा स्थान की उपलब्धता।
- बच्चों को खेल-खेल में तथा विषयबद्ध रूप में शिक्षण।
- शारीरिक शिक्षा एवं कला संबंधी सुविधाओं तक विद्यालय अवधि के बाद भी बच्चों एवं समुदाय की पहुँच।
- कला शिक्षण का उद्देश्य सौंदर्यात्मक और वैयक्तिक चेतना के साथ-साथ ज्ञानात्मक और सामाजिक विश्वास को प्रोत्साहित करना होगा ताकि बच्चों में खुद को विविध रूपों में व्यक्त करने की क्षमता विकसित हो।
- कला शिक्षण में शास्त्रीय गायन, नृत्य, संगीत के साथ-साथ परिवेशीय शिल्प एवं दस्तकारियों को इस प्रकार सम्मिलित करना ताकि बच्चों के विद्यालयी शिक्षा के बाहर भी उपयोगिता सिद्ध हो।
- कला शिक्षा में बच्चों को पाठ्यसामग्री के स्थान पर शिक्षकों को अधिकाधिक संसाधानात्मक सामग्री इस दृष्टिकोण के साथ उपलब्ध करायी जायेगी जिससे शिक्षक बच्चों में सौंदर्यात्मक चेतना के माध्यम से अभिव्यक्ति के अवसर उपलब्ध करा सकें।
- शारीरिक शिक्षा के अन्तर्गत बच्चों को खेलकूद, योग, राष्ट्रीय सेवा योजना, भारत स्काउट एवं गाइड और एन०सी०सी० आदि गतिविधियों के माध्यम से शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक और मानसिक विकास के अवसर उपलब्ध कराये जायेंगे।

४.(६)- कार्यानुभव

- प्रत्येक बच्चा सक्रिय होता है तथा यह अपनी सक्रियता के किसी भी स्थान-घर, विद्यालय, समाज या अन्य स्थल पर कार्यानुभव के माध्यम से सीखता है।

MC BUDAUN

- आयु व योग्यता के अनुरूप कार्यानुभव बच्चों में ज्ञान निर्माण करता है।
- अपने परिवेशीय कार्यानुभव से मिला ज्ञान बच्चों की रचनात्मकता, आधारभूत वैज्ञानिक अवधारणा, जीवननोपयोगी कौशलों के विकास में उपयोगी होता है।
- कार्यानुभव के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया आदि रचनात्मक और सहज होती है।
- विद्यालय स्तर पर कार्यानुभव हेतु समृद्ध संसाधन और शिक्षण सामग्रियाँ आवश्यक हैं।

५. पाठ्यचर्या एवं आकलन प्रणाली के प्रति दृष्टिकोण।

- बच्चों की विषय-वस्तु के ज्ञान के आकलन के स्थान पर समझ का आकलन।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की पारदर्शी व्यवस्था जो कक्षा की गतिविधियों पर आधारित होगा।
- आकलन प्रणाली का उद्देश्य बच्चों के सीखने की प्रगति जॉचना न कि पास-फेल करना।
- परीक्षा प्रणाली के कारण उत्पन्न होने वाले मानसिक तनाव एवं फेल होने के भय का निराकरण एवं आत्मविश्वास उत्पन्न करना।
- प्रश्न-पत्र का स्वरूप परिवर्तन जिसमें बच्चों की तार्किक एवं रचनात्मक दक्षताओं का परीक्षण होगा न कि रटने की क्षमता का।
- कार्यानुभव, स्वास्थ्य, योग, शारीरिक शिक्षा, संगीत एवं कला को भागीदारी, रूचि और जुडाव तथा जिस स्तर तक क्षमताओं एवं कौशलों का विकास के आधार पर आकलन।
- बच्चों के स्व-मूल्यांकन को आकलन में स्थान।

NIC BUDAUN

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा संचालित

सेवापूर्व प्रशिक्षण आख्या वर्ष २०१०-११

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बदायूँ में मुख्यता दो प्रकार के प्रशिक्षण संचालित होते है - (१) सेवापूर्व बी०टी०सी० प्रशिक्षण/वि०बी०टी०सी० प्रशिक्षण (२) सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण

१. सेवापूर्व प्रशिक्षण के तहत जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बदायूँ में निम्नवत् प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का सघन संचालन किया गया है जो निम्नवत् है -

- **विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षण २००७ का चयन एवं प्रशिक्षण -**

विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षण २००७ के अन्तर्गत ११७५ प्रशिक्षणार्थियों के ०३ माह का सैद्धान्तिक प्रशिक्षण डायट स्तर पर एवं ०३ माह का क्रियात्मक प्रशिक्षण जनपद के विभिन्न प्राथमिक विद्यालयों में संचालित कर कुल ०६ माह का सम्पूर्ण प्रशिक्षण प्रदान किया गया इस दौरान उन्हें प्राथमिक स्तरीय कक्षा शिक्षण हेतु प्रशिक्षित किया गया। ११७५ शिक्षणार्थियों का प्रशिक्षण उपरान्त प्राथमिक विद्यालयों में नियुक्ति हेतु उनकी सूची जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी बदायूँ को प्रेषित की गयी और बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा नियुक्ति प्रदान कर दी गयी है। शेष ११ प्रशिक्षु प्रशिक्षण ले रहें है जिन्हें परीक्षा उपरान्त नियुक्ति प्रदान कर दी जायेगी।

- **विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षण २००८ विशेष चयन प्रशिक्षण –**

इसके अन्तर्गत १३५ प्रशिक्षणार्थियों को ०६ माह का सैद्धान्तिक एवं क्रियात्मक प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें शिक्षण कौशल में दक्ष बनाया गया। तदोपरान्त परीक्षा आयोजित कर उत्तीर्ण हुए १३५ प्रशिक्षणार्थियों की सूची जिला बेसिक शिक्षा कार्यालय बदायूँ को प्रेषित कर नियुक्ति प्रदान कर दी गयी। शेष २० प्रशिक्षुओं का प्रशिक्षण संचालित है जिन्हें निकट भविष्य में परीक्षा उत्तीर्ण उपरान्त नियुक्ति हेतु भेज दिया जायेगा।

- **विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षण २००८ सामान्य चयन एवं प्रशिक्षण –**

उपरोक्त दोनो प्रशिक्षणों की भाँति ही वि०बी०टी०सी० २००८ सामान्य चयन प्रक्रिया के तहत जनपद की चयन समिति द्वारा कुल १९८ प्रशिक्षणार्थियों का चयन करके उन्हें डायट द्वारा ०६ माह का सैद्धन्तिक एवं क्रियात्मक प्रशिक्षण पूर्ण किया गया। तदोपरान्त १९८ प्रशिक्षणार्थियों की अन्तिम परीक्षा आयोजित की गयी। परीक्षा में उत्तीर्ण किये गये कुल १९८ प्रक्षिक्षुओं की उत्तीर्ण सूची नियुक्ति हेतु जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, बदायूँ को प्रेषित की गयी, शेष ३७८ प्रशिक्षुओं का प्रशिक्षण संचालित है। जिन्हें निकट भविष्य में परीक्षा उपरान्त नियुक्ति हेतु भेज दिया जायेगा। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, बदायूँ द्वारा पृथक-पृथक बैचों में वि०बी०टी०सी० २००७ के ११७५ प्रशिक्षु , वि०बी०टी०सी० (विशेष चयन) प्रशिक्षण २००८ के १३५ प्रशिक्षु एवं वि०बी०टी०सी० प्रशिक्षण २००८ सामान्य चयन के १९८ प्रशिक्षुओं सहित कुल १५०८ प्रशिक्षुओं को नियुक्ति प्रदान कर विभिन्न ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षण हेतु सरकारी सेवा में संलग्न किया गया है।

शेष वि०बी०टी०सी० २००७ के ११ प्रशिक्षु वि०बी०टी०सी० २००८ विशेष चयन के २० तथा वि०बी०टी०सी० २००८ सामान्य चयन के ३७८ प्रशिक्षुओं सहित कुल ४०९ प्रशिक्षुओं से परीक्षा उपरान्त नियुक्ति हेतु भेज दिया जायेगा।

- **दो वर्षीय बी०टी०सी० प्रशिक्षण २००४ एवं २०१० का चयन एवं प्रशिक्षण –**

वर्तमान में डायट बदायूँ में दो वर्षीय सामान्य बी०टी०सी० प्रशिक्षण के ०२ बैचों का प्रशिक्षण संचालित है जो निम्नवत् है –

१. दो वर्षीय बी०टी०सी० प्रशिक्षण २००४ –

दो वर्षीय बी०टी०सी० प्रशिक्षण २००४ के अन्तर्गत केवल ८५ प्रशिक्षुओं का चयन जनपदीय चयन समिति द्वारा किया गया, जिसका प्रशिक्षण डायट बदायूँ में संचालित हो रहा है। इन प्रशिक्षुओं को ७३ की संख्या एवं २२ की संख्या के ०२ सैक्शन में विभाजित कर प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। सेक्शन ए० के इन ७३ प्रशिक्षुओं के एक बैच के द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षा सम्पन्न हो चुकी है जिसमें ७१ प्रशिक्षु उत्तीर्ण हुए है। यह तृतीय सेमेस्टर का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है। दूसरे सैक्शन बी० के २२ प्रशिक्षुओं के प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा आयोजित की जा चुकी है जिसमें से कुल २२ प्रशिक्षु प्रथम सेमेस्टर में उत्तीर्ण होकर द्वितीय सेमेस्टर का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहें हैं।

२. दो वर्षीय बी०टी०सी० प्रशिक्षण २०१० –

बी०टी०सी० प्रशिक्षण २०१० हेतु कुल प्राप्त आवेदन पत्रों में वरीयता सूची के आधार पर जिलाधिकारी बदायूँ की अध्यक्षता में गठित जनपदीय चयन समिति द्वारा शासनादेश में वर्णित मानक अनुसार समस्त शर्तो को कुल ९०

NIC BUDAUN

प्रशिक्षुओं का चयन किया गया है। इन प्रशिक्षुओं का प्रथम सेमेस्टर का प्रशिक्षण डायट बदायूँ में संचालित है। दो वर्षीय बी०टी०सी० पाठ्यक्रमानुसार प्रशिक्षुओं का सैद्धान्तिक प्रश्न-पत्रों एवं वैकल्पिक विषयों के कक्षा शिक्षण का गतिविधि आधारित प्रशिक्षण संचालित किया जा रहा है। साथ ही व्यवहारिक कक्षा शिक्षण का प्रयोगात्मक प्रशिक्षण जनपद में प्राथमिक विद्यालयों में संचालित किये जाने का प्राविद्यान है। प्रयोगात्मक प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षुओं को निश्चित समय अवधि में पूरे समय प्राथमिक विद्यालयों में रहकर प्रार्थना स्थल की गतिविधियों से लेकर विद्यालय बंद होने तक के समस्त क्रियाकलापों में संलग्न किया जाता है। यह प्रशिक्षु विद्यालय के प्रधानाध्यापक के नेतृत्व में विद्यालय के अन्य अध्यापकों के साथ समान रूप से सक्रिय रहकर विद्यालयी गतिविधियों को सम्पन्न करने की दक्षता प्राप्त करते हैं ताकि प्रशिक्षण उपरान्त पूर्ण रूप से शिक्षण कार्य में दक्ष शिक्षक विद्यालयों को प्राप्त हो सकें।

❖ **<u>जनपद में सेवारत शिक्षक प्रशिक्षणों का संचालन</u>**

जनपद बदायूँ में संचालित प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों की शैक्षिक गुणवत्ता वृद्धि सर्व शिक्षा अभियान के मानकों अनुरूप स्तर पा लेने के उद्देश्य से शिक्षकों को विभिन्न प्रशिक्षण प्रदान किये जा रहें है। यह सेवारत प्रशिक्षण के तहत जनपद के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत समस्त प्रधानाध्यापकों व सहायक अध्यापकों को समान रूप से आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण प्रदान किये जाते है। इसके साथ ही शैक्षिक सपोर्ट में संलग्न सभी बी०आर०सी०/एन०पी०आर०सी० समन्वयकों को भी प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तरीय प्रशिक्षण प्रदान करने की रणनीति के तहत प्रशिक्षण कलैण्डर अनुसार प्रशिक्षण दिये जा रहें है। इन प्रस्तावित प्रशिक्षणों की आवश्यकता का आंकलन जनपद में विभिन्न स्तरों पर आयोजित शैक्षिक बैठकों, कार्यशालाओं, शैक्षिक सेमीनारों तथा पूर्व के प्रशिक्षण फीडबैक से किया जाता है।

NIC BUDAUN

जनपद के वार्षिक बजट एवं प्रशिक्षण कार्ययोजना के अनुसार आगामी प्रशिक्षण निम्नवत् प्रस्तावित है –

सर्वशिक्षा अभियान के अन्तर्गत सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण योजना २०१०–२०११

क. प्रथमिक स्तरीय प्रशिक्षण –

क्र०सं०	प्रस्तावित प्रशिक्षण का नाम	अवधि	लक्ष्य समूह
१	स्तत्, व्यापक मूल्यांकन	०२ दिन	प्रधानाध्यापक (प्रति विद्या० एक)
२	आर०टी०ई० के परिपेक्ष्य में विशिष्ट प्रशिक्षण	०३ दिन	सहायक अध्यापक (प्रति विद्या० ०२)
३	अंग्रेजी शिक्षण हेतु प्रशिक्षण	०३ दिन	सहायक अध्यापक (प्रति विद्या० ०१)

ख. उच्च प्राथमिक स्तरीय प्रशिक्षण –

क्र०सं०	प्रस्तावित प्रशिक्षण का नाम	अवधि	लक्ष्य समूह
१	अंग्रेजी शिक्षण हेतु प्रशिक्षण	०३ दिन	प्रति उच्च प्राथमिक विद्यालय से ०१ शिक्षक
२	एल०ई०पी० के अन्तर्गत गणित शिक्षण हेतु प्रशिक्षण	०२ दिन	प्रति विद्यालय ०१ शिक्षक
३	एल०ई०पी० के अन्तर्गत विज्ञान शिक्षण हेतु प्रशिक्षण	०२ दिन	प्रति विद्यालय ०१ शिक्षक

NIC BUDAUN

ग. बी०आर०सी०/एन०पी०आर०सी० समन्वयकों की दक्षता संवर्द्धन हेतु प्रशिक्षण

क्र०सं०	प्रस्तावित प्रशिक्षण का नाम	लक्ष्य समूह
१	प्राथमिक स्तर के सभी प्रशिक्षण	बी०आर०सी० एवं एन०पी०आर०सी० समन्वयक
२	उच्च प्राथमिक स्तर के सभी प्रशिक्षण	बी०आर०सी० एवं एन०पी०आर०सी० समन्वयक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उ०प्र०, लखनऊ द्वारा शिक्षक–शिक्षा के अन्तर्गत प्रस्तावित प्रशिक्षण योजना वर्ष २०१०–२०११

प्राथमिक स्तरीय प्रशिक्षण –

क्र०सं०	प्रस्तावित प्रशिक्षण का नाम	अवधि	लक्ष्य समूह
१	प्रशिक्षण आवश्यकताओं का आंकलन	०१ दिन	प्रधानाध्यापक एवं एन०पी०आर०सी०
२	एक कदम और (बालमित्र शासन एवं वहुस्तरीय प्रशिक्षण	०३ दिन	प्रति विद्यालय ०२ शिक्षक
३	सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबन्धन सम्बन्धी प्रशिक्षण	०३ दिन	प्रति विद्यालय ०२ शिक्षक

४	क्रियात्मक शोध सम्बन्धी प्रशिक्षण	०३ दिन	प्रति विद्यालय ०२ शिक्षक
५	स्वास्थ्य सुरक्षा एवं संरक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण	०३ दिन	प्रति विद्यालय ०२ शिक्षक

उच्च प्राथमिक स्तरीय प्रशिक्षण –

क्र०सं०	प्रस्तावित प्रशिक्षण का नाम	अवधि	लक्ष्य समूह
१	प्रशिक्षण आवश्यकताओं का आंकलन	०१ दिन	प्रधानाध्यापक एवं एन०पी०आर०सी०
२	समाजिक अध्ययन शिक्षण प्रशिक्षण	०३ दिन	प्रति विद्यालय ०२ शिक्षक
३	सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबन्धन सम्बन्धी प्रशिक्षण	०३ दिन	प्रति विद्यालय ०२ शिक्षक
४	क्रियात्मक शोध सम्बन्धी प्रशिक्षण	०३ दिन	प्रति विद्यालय ०२ शिक्षक
५	हिन्दी भाषा पर प्रशिक्षण	०३ दिन	प्रति विद्यालय ०२ शिक्षक

NIC BUDAUN

सेवारत शिक्षण प्रशिक्षण के तहत आयोजित प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण प्रगति आख्या वर्ष २०१०–११

प्राथमिक स्तरीय स्कूल रेडीनेस प्रशिक्षण –

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बदायूँ पर वर्ष २०१०–२०११ में स्कूल रेडीनेस प्रोग्राम के अन्तर्गत ४+ आयु वर्ग के बच्चों को विद्यालय में प्रवेश हेतु पूर्व तैयारी के उद्देश्य से यह कार्यक्रम जनपद के चयनित २०० विद्यालयों में चलाया जा रहा है। इसके लिए डायट–बदायूँ पर चयनित विद्यालयों से प्रति विद्यालय एक शिक्षामित्र को प्रशिक्षण दिया जा रहा है जिसके अन्तर्गत अव तक (दि० २८.०७.१०) कुल २०० शिक्षामित्रों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है शेष विद्यालयों के शिक्षामित्रों को जुलाई २०१० के अन्त तक प्रशिक्षित किया जायेगा। चयनित विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों का भी ०१ दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया जायेगा।

प्राथमिक स्तरीय लर्निंग इन्हेसमेन्ट प्रोग्राम के तहत पठन कौशल एवं गणितीय दक्षता विकास प्रशिक्षण –

कक्षा १ व २ के बच्चों में भाषा में पठन क्षमता विकास एवं गणितीय दक्षता प्राप्त करने के उद्देश्य से जनपद के सभी प्राथमिक विद्यालयों में लर्निंग एन्हेन्समेन्ट प्रोग्राम कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत डायट स्तर पर ब्लाक स्तरीय संदर्भदाता प्रशिक्षण का आयोजन दि० २६.०७.१० से २७.०७.२०१० तक किया गया जिसके कुल ७२ ब्लाक स्तरीय संदर्भदाता एवं ब्लाक समन्वयकों ने प्रतिभाग किया। इसी के तहत दि० ०३.०८.१० से ०४.०८.१० तक ब्लाक स्तर पर कक्षा १ व २ को पढ़ाने वाले शिक्षक/शिक्षामित्रों का प्रशिक्षण आयोजित किया गया इस प्रशिक्षण में प्रति प्राथमिक विद्यालय ०२ शिक्षक/शिक्षामित्र ने प्रतिभाग किया। विद्यालयों में यह कार्यक्रम ०५.०८.२०१० से मार्च २०११ तक क्रमबद्ध/चरणबद्ध रूप से चलाया जायेगा।

प्रशिक्षण आवश्यकताओं का आंकलन प्रशिक्षण –

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बदायूँ पर राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उ०प्र० लखनऊ द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण के अर्न्तगत प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तरीय संदर्भदाता प्रशिक्षण क्रमश : दिनांक १८.०८.२०१० एवं १९.०८.२०१० को आयोजित किया गया जिसमें प्रति विकास क्षेत्र ०३ संदर्भदाता एवं ब्लाक समन्वयक/सह–समन्वयकों ने

प्रतिभाग किया। इस प्रशिक्षण में प्राथमिक स्तरीय आवश्यकता आधारित प्रशिक्षणें पर चर्चा की गयी। उक्त प्रशिक्षण ब्लाक स्तर पर समस्त बी०आर०सी० केन्द्रों पर दिनांक २०.०८.२०१० एवं २१.०८.२०१० में आयोजित किया गया जिसमें प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापक एवं एन०पी०आर०सी० समन्वयकों ने प्रतिभाग किया।

एल०ई०पी० के अन्तर्गत उच्च प्राथमिक स्तरीय गणित/विज्ञान शिक्षण हेतु प्रशिक्षण –

कक्षा ६ में करके सीखें गणित/विज्ञान पुस्तकों पर आधारित गणित/विज्ञान में शिक्षण में शिक्षकों को दक्ष बनाने के उद्देश्य से दिनांक २०.०८.२०१० से २१.०८.२०१० एवं २५.०८.१० से २६.०८.२०१० तक ०२ फेरो में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बदायूँ पर राज्य स्तर पर प्रशिक्षण प्राप्त जनपद स्तरीय संदर्भदाताओं द्वारा ब्लाक स्तरीय संदर्भदाताओं के प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें प्रति ब्लाक ०३ संदर्भदाता एवं ब्लाक समन्वयकों ने प्रतिभाग किया। यह प्रशिक्षण बीआर०सी० केन्द्र पर प्रत्येक विकास क्षेत्र में दिनांक २७.०८.२०१० से २८.०८.२०१० तक आयोजित किया जायेगा जिसमें प्रत्येक उच्च प्राथमिक विद्यालय में ०१ गणित/विज्ञान शिक्षक एवं न्याय पंचायत समन्वयक प्रतिभाग करेंगे। विद्यालयों ने यह कार्यक्रम ०१ सितम्बर २०१० से ३१ मार्च २०१० तक कक्षा ६ के बच्चों को गणित विज्ञान विषय के शिक्षण हेतु चलाया जायेगा।

- - - - -

NIC BUDAUN